Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-329-333

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-6.125
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 329-333

©2026 Gyanvividha

https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. मनीषा कुमारी
पीएच.डी. शोधार्थी, हिंदी विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला.

2. डॉ. आशुतोष कुमार
शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य-हिंदी,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, सांध्यकालीन
अध्ययन विभाग, शिमला-171005.

Corresponding Author :

डॉ. आशुतोष कुमार
शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य-हिंदी,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, सांध्यकालीन
अध्ययन विभाग, शिमला-171005.

जया जादवानी के कथा साहित्य में मानव मूल्य : एक अध्ययन

शोध सार : मानव जीवन में मूल्यों का अत्यंत महत्व है। मूल्य मनुष्य को केवल बेहतर जीवन दृष्टि ही नहीं देते अपितु उसे परिवार तथा समाज उच्च स्थान का अधिकारी बनाते हैं। ये वे मूलभूत सिद्धांत, मानदंड, आदर्श एवं गुण हैं जिसके आधार पर व्यक्ति अथवा समाज किसी विचार, व्यवहार, कार्य या वस्तु को उचित-अनुचित, सही-गलत, महत्वपूर्ण-महत्वहीन मानते हैं। ये गुण या सिद्धांत मानव जीवन एवं मानव समाज के नैतिक विकास के लिए वांछनीय माने जाते हैं। मूल्य न केवल व्यक्ति और समाज के लिए कल्याणकारी हैं अपितु ये मनुष्य के मनुष्य के साथ संबंधों में भी मधुरता लाते हैं। जया जादवानी ने अपने कथा साहित्य में मानव मूल्यों का सजीवता से चित्रण किया है। इनके लेखन के माध्यम से इन्होंने मानव जीवन के धरातल पर उतरकर जीवन के अत्यंत संवेदनशील दृश्यों को अपने साहित्य में स्थान दिया है। इनके कथा साहित्य में हाशिए के समाज की स्थिति का अंकन लेखिका द्वारा किया गया है जो इनके इस समाज के प्रति गहरी संवेदना से भरे होने का परिचायक है। इनका कथा साहित्य मानव को मानव समझने तथा मानव समाज में नैतिक मूल्यों के उतार-चढ़ाव का निदर्शन है। इनकी अब तक की रचनायात्रा में पांच उपन्यास और आठ कहानी संग्रह शामिल हैं। इस शोध आलेख का उद्देश्य जया जादवानी के कथा साहित्य में अंतर्निहित मानव मूल्यों की पड़ताल करना है। इस अध्ययन में अंतर्वस्तु विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है।

बीज शब्द : हाशिए का समाज, मानव, मूल्य, नैतिकता, द्वंद्व, साहित्य, सत्य, आदर्श, मानवता।

प्रास्ताविक : जया जादवानी आधुनिक हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण उपन्यासकार, कथाकार एवं कवयित्री हैं। इन्होंने हिन्दी कथा-साहित्य में अपने लेखन के माध्यम से अस्तित्व-बोध, स्त्री-विमर्श, मानवीय संबंधों, सामाजिक समस्याओं तथा सामाजिक यथार्थ के विभिन्न पक्षों को केंद्रित करके अपना विशिष्ट योगदान दिया है। इनका लेखन केवल स्त्री विमर्श

तक सीमित न होकर मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन और उसकी आंतरिक जिजीविषा की गहन अभिव्यक्ति करता है। जया जादवानी का रचना संसार अत्यंत व्यापक है। इनके संपूर्ण रचना संसार में अनेक कहानियां, उपन्यास एवं कविताएं शामिल हैं जो इनके जीवन अनुभवों, संवेदनशीलता, सामाजिक बोध को पाठकों के समक्ष रखती हैं। इनके लेखन में मनुष्य के मनोवैज्ञानिक यथार्थ को अत्यंत गहनता से अभिव्यक्त किया गया है। हाशिए के समाज से लेखिका के गहरे सरोकार हैं। वे इनके प्रति पर्याप्त सजग हैं और समानुभूति से परिपूर्ण भी। हाशिए के समाज समाज की समस्याओं, अधिकारों और संघर्षों के प्रति इनकी सजगता इनके साहित्य में सर्वत्र परिलक्षित होती है। जया जादवानी की मानवीय संवेदना इनके लेखन को विशिष्टता प्रदान करती है। इनके पात्र जीवन की कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए अपने अस्तित्व एवं स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए प्रयासरत हैं। इस प्रकार इनका साहित्य मानव जीवन की अभिव्यक्तियों के कारण मानव मूल्यों के उत्थान-पतन का महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जा सकता है।

संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण : ‘हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध’ (2018) के संपादक दयानिधि मिश्र, उदयन मिश्र, प्रकाश उदय हैं एवं वाणी प्रकाशन द्वारा दिल्ली से प्रकाशित यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है। यह पुस्तक भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों तथा लोकजीवन के तथ्यों को वर्णित और उजागर करती है। रत्ना लाहिड़ी की पुस्तक ‘मूल्य : संस्कृति, साहित्य और समय’ (1987) का प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली से हुआ एवं इस पुस्तक में संस्कृति तथा साहित्य के माध्यम से मानवीय मूल्यों के ह्रास-पतन पर विचार किया गया है। यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है। अविनाश महाजन की पुस्तक ‘उषा प्रियंवदा की कहानियों में टूटते जीवन मूल्यों का यथार्थ’ (2015) में पारिवारिक मूल्यों में विघटन के यथार्थ को अभिव्यक्त किया गया है। इस पुस्तक का प्रकाशन शैलजा प्रकाशन कानपुर से हुआ। यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है। इंद्रनाथ मदान की पुस्तक ‘हिन्दी कहानी अपनी ज़ुबानी’ (1968) में कहानी के विकास के साथ मानवीय मूल्यों के बदलते स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है। वाणी प्रकाशन से प्रकाशित यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है। जगदीश गुप्त की पुस्तक ‘नई कविता स्वरुप और समस्याएं’ (1969) के माध्यम से व्यक्ति में मानवीय संवेदना तथा मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति का प्रयास किया गया है। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है। जया जादवानी के ‘मिठो पाणी खारो पाणी’ (उपन्यास, 2014), ‘तत्त्वमसि’ (उपन्यास, 2002), ‘कुछ न कुछ छूट जाता है’ (उपन्यास, 2023), ‘देह कुठरिया’ (उपन्यास, 2021), ‘काया : कितनी गांठें कितने दर्द’ (उपन्यास,2025), ‘अनकहा आख्यान’ (कहानी-संग्रह, 2019), ‘उससे पूछो’ (कहानी संग्रह, 2008), ‘वहाँ मैं हूँ’ (कहानी संग्रह, 2018), ‘खरगोश’ (उपन्यास, 2023) की अंतर्वस्तु इस शोध पत्र का मुख्य आधार है।

आकलन : साहित्य एवं समाज का अटूट संबंध है। जिस प्रकार समाज के अभाव में साहित्य महत्वहीन है ठीक उसी प्रकार मूल्यों के अभाव में एक स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज की निर्मिति असंभव है। मूल्य समाज को ताजगी एवं सजीवता प्रदान करते हैं, साथ ही मनुष्य में वैचारिक, तार्किक क्षमताओं को विकसित करते हैं। वीरेंद्र मोहन के अनुसार, “मानवीय जीवन की गतिविधि को निर्धारित करने तथा संचालित करने वाले मूलभूत तत्त्वों को मूल्य की संज्ञा प्रदान की जाती है।”[1] जो तत्त्व मानव को जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं और उसकी दिशाओं का निर्धारण करते हैं उन्हें मूल्य कहा गया है। मूल्य मनुष्य के लिए अत्यंत आवश्यक हैं साथ ही समाज के लिए भी मूल्यों का होना श्रेयस्कर है। शैलजा भारद्वाज इस संबंध में कहती हैं, “कबीर संसार को सुखिया और स्वयं को दुखिया कहता है जो दूसरों के लिए जागता और रोता है, यह दूसरों के लिए जागना और रोना ही मानव-मूल्यों का आधार है।”[2] कबीर के इस दूसरों के लिए जागने और रोने में परदु:ख कातरता, परपीड़ा के लिए चिंता तथा चिंता के निराकरण के लिए उद्योग करने का भाव निहित है। शैलजा भारद्वाज ने इसी तथ्य की ओर संकेत किया है। मूल्य मनुष्य को जीवन की प्रत्येक दिशा में विवेकशीलता से निर्णय लेने की सहूलियत देते हैं। इनके सहयोग से मनुष्य समाज में अपने लक्ष्यों की पूर्ति

करता है तथा समाज में सम्मानजनक कार्यों का निर्वहन करता है। विपरीत परिस्थितियों, संघर्षों की स्थिति में भी मूल्य मनुष्य में आशा एवं विश्वास का दीपक जलाए रखते हैं और उसे सकारात्मक दिशा की ओर दिष्ट करते हैं। ये अपने अनेक प्रकारों द्वारा मानव जीवन को गहराई से प्रभावित करते हैं। इनके प्रकारों में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, विश्वास, आशा, साहस, सम्मान, कर्मठता, संवेदनशीलता, जागरूकता, न्याय, अहिंसा आदि हैं। समाज में समरसता एवं शांति के स्थायित्व के लिए मनुष्य में मूल्यों का होना अवश्यंभावी है। मूल्यधर्मी मनुष्य, अच्छे एवं स्वस्थ समाज का निर्माण करता है तथा स्वयं नैतिकता के पथ पर आगे बढ़ते हुए दूसरों के लिए उदाहरण बनता है। रत्ना लाहिड़ी के अनुसार, "मानव मूल्य कुछ विशिष्ट होते हैं, कुछ सामान्य और उनका संबंध निश्चय ही सांस्कृतिक और भौगोलिक दोनों पक्षों में होगा, जैसे मनुष्यमात्र बहुत से संदर्भों में एक-दूसरे के समान हैं पर उतने ही एक-दूसरे से विशिष्ट भी हैं। यही स्थिति मानव मूल्यों की भी होगी।"[3] मानव मूल्य सबके लिए भिन्न हो सकते हैं ठीक वैसे ही जैसे मानव की प्रवृत्ति भिन्न होती है। मूल्य जीवन को नैतिक आधार पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। अविनाश महाजन उल्लेख करते हैं, "ऐसी कोई भी वस्तु मूल्य हो सकती है जो जीवन को आगे बढ़ाती है और सुरक्षित करती है।"[4] मनुष्य द्वारा अंगीकृत मूल्य उसके जीवन का महत्वपूर्ण अंश बन जाते हैं। साथ ही ये मानव संस्कृति को संचालित करने का कार्य करते हैं। किसी भी राष्ट्र, धर्म या समाज में विकसित होने वाले मूल्य-मान उसका स्थायी परिचय बन जाते हैं। साहित्य मानव जीवन एवं समाज से प्रभावित होने के कारण मूल्यों को समेटे रहता है। साहित्य की मूल्य संबंधी यात्रा के विषय में इंद्रनाथ मदान कहते हैं, "नई कहानी में तलाश पात्रों की नहीं, यथार्थ की है। पहले कहानी कला मूल्यों को लेकर लिखी जाती थी अब जीवन मूल्यों को लेकर।"[5] मानव जीवन में मूल्यों की प्रतिष्ठा पर बल दिया जाता है। मूल्यहीन समाज का अस्तित्व न के बराबर माना जाता है। जगदीश गुप्त के अनुसार, "जीवन में मूल्यों की प्रतिष्ठा का अर्थ मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा है उसके बिना मानव का अस्तित्व निरर्थक है।"[6] जीवन मूल्य किसी भी प्रकार से मानवीय मूल्यों से भिन्न नहीं माने जाते। मूल्यों के अभाव में मानव जीवन को निरर्थक माना जाता है।

जया जादवानी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से मानव जीवन की सजीवता एवं यथार्थ का अंकन किया है। इन्होंने समाज में मनुष्य के संघर्षों, द्वन्द्वों एवं परिस्थितियों के साथ नैतिक मूल्यों के ह्रास तथा विकास की यात्रा को उजागर किया है। इनके कहानी संग्रह 'अंदर के पानियों में कोई सपना कांपता है' में संकलित कहानी 'जब पेड़ों से पत्ते गिरते हैं' के पात्र निक्की तथा दादाजी के माध्यम से पारिवारिक परिवेश में आपसी तालमेल, सौहार्द की भावना का समावेश द्रष्टव्य है। वृद्ध दादाजी अपनी पोती निक्की को अपने बीते जीवन की कहानियां सुनाया करते और उनकी कहानियां हफ्तों लंबी चलतीं। लेखिका कहती हैं, "दादाजी विक्स लगा दूँ? मैं पूछती हूँ। अं...हं...। वे मेरे सिर के ऊपर कहीं देखते हैं। मैं विक्स ले आती हूँ और उनके गले व छाती पर मलने लगती हूँ। वे चौंककर मुझे बैठने का इशारा करते हैं, मैं वहीं कुर्सी खींचकर बैठ जाती हूँ...। मैं उनके चेहरे को देखती हूँ... । कितनी खामोशी से वे समेट रहे हैं खुद को...। उनका वह रुप...मैं याद करने की कोशिश करती हूँ...।"[7] पारिवारिक परिवेश में नैतिक मूल्यों के अवशेषों को लेखिका ने निक्की एवं दादाजी के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। परिवार में पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के समन्वय का स्वरुप दृष्टिगत होता है। लेखिका अपने कहानी-संग्रह 'अनकहा आख्यान' की कहानी 'सुनो ओ पिता' के माध्यम से पिता से संतान को प्राप्त मूल्यों के विषय में कहती हैं, "मुझे खुद पर बड़ी शर्म भी आती है कि मुझे वो-वो चीज़ें याद नहीं हैं जो मुझे आपसे मिलीं। हौसला, स्वाभिमान, अकेले जूझने की फौलादी ताकत, खुद्दारी और भी बहुत कुछ। उस संघर्ष ने मेरे व्यक्तित्व को एक धार दी।"[8] लेखिका कहती हैं कि उन्हें उनके पिताजी से सीखने को काफी कुछ मिला जिसकी गिनती वह कभी नहीं कर पाती।

उपन्यास 'देह कुठरिया' का पात्र रवि अपने जीवन में अध्ययन को उचित महत्व देता है। वह गांधी, विवेकानंद एवं ओशो की अनेक पुस्तकें पढ़ता है और पाता है की पुस्तकें उसे जीवन के प्रति नया नज़रिया प्रदान करती हैं।

लेखिका कहती हैं, “उसके सामने किताबों से भरा रैक है... जिसमें वर्डसवर्थ से लेकर गांधी, विवेकानंद और ओशो की किताबें हैं, जिन्हें पढ़ते हुए कुछ स्पेशल सा फील करता रहा था। अपने आपको खास समझता था। कभी-कभी गहरी अनुभूति होती कि उसे जीना चाहिए।”[9] अध्ययन रवि को जीवन के प्रति आशावान बनाता है कुछ समय के लिए ही सही लेकिन उसे अपना जीवन सकारात्मक तरीके से जीने की आजादी देता है। उपन्यास ‘तत्त्वमसि’ की पात्र मानसी गर्भावस्था में भी पढ़ाई जारी रखती है। उसे लगता है कि वह पढ़ेगी तो उसका बच्चा भी अभिमन्यु की भांति दुनिया में कदम रखने से पहले ही सीखने लगेगा। वह कहती है, “मैं खाली वक्त में जमाने भर का साहित्य पढ़ती...वह कुछ तो सीखेगा, जैसे अभिमन्यु ने सीखा था गर्भ में। मैं मातृसुख के गहरे भाव से भरी होती।”[10] मानसी स्वयं को निरंतर साहित्य से जोड़े रखती। अपनी संतान के प्रति गहरी संवेदना उसके व्यवहार में दृष्टव्य है। इसके साथ ही विदेशी जीवन के प्रति आकर्षण को भी लेखिका ने अपने साहित्य के माध्यम से अंकित किया है। इनके कहानी-संग्रह ‘उससे पूछो’ की कहानी ‘लाइन इस पार’ में लेखिका कहती हैं, “ड्रायर से बाल सुखाना मेरे लिए किसी अचंभे से कम नहीं था। उस दिन ड्रायर मैंने पहली बार देखा था। उनका सिर खुला था।”[11] लेखिका जब रेनू के घर जाती है तो उसकी विदेशी भाभी से मिलती है जो ड्रायर से अपने बाल सुखा रही थी। उसे वह नई और अच्छी चीज लगती है और वह कुछ समय के लिए खो जाती है। उपन्यास ‘मिठो पाणी खारो पाणी’ के माध्यम से लेखिका पारिवारिक मूल्यों से अवगत करवाती हुई कहती हैं, “दिन भर वह मशीन चलाती है, घर के दूसरे काम करती है। माँ और पिताजी की लड़ाई में माँ का पक्ष लेकर पिता को डाँटती है। थोड़ी देर दादाजी के साथ बैठती है।”[12] उपन्यास की पात्र रुमी अपने माता-पिता और दादाजी के साथ जीवन जीती है तथा परिवार में सामंजस्य बिठाए रखने में अहम भूमिका का निर्वहन करती है।

उपन्यास ‘काया : कितनी गांठें कितने दर्द’ के माध्यम से लेखिका ने समाज में बदलते जीवन मूल्यों के यथार्थ को उजागर किया है। उपन्यास की पात्र दिव्या और काया (ध्यातव्य है कि काया उपन्यास की कथापात्र काया तथा खरगोश की काया दो भिन्न पात्र हैं) दिल्ली में पार्थ के घर रहती हैं। वह पूरे दिन नशे में रहता है तथा वहां हर सप्ताह किसी न किसी पार्टी में व्यस्त रहता है। काया को कुछ ऐसे ही सामान की लिस्ट देते हुए वह कहता है, “अच्छा चलो, जाओ... थोड़ा घूम भी आओ और ये सामान भी ले आना। तुम लोग आओ तो पार्टी करें। तब तक कुछ खाने-पीने का ऑर्डर करता हूँ। पार्थ भैया ने सामान की लिस्ट उसे सेंड कर दी और रुपए भी दे दिये। काया ने देखा...एमडी...म्याऊ-म्याऊ, वीड और दूसरी चीजें।”[13] समाज में मानव मूल्यों में परिवर्तन मानव को कहीं सकारात्मकता प्रदान करता है तो कहीं पतन की गर्त में धकेलता है। नशे में डूबा वर्तमान का मनुष्य अपने साथ-साथ अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी मुश्किलें पैदा करता है। उपन्यास ‘खरगोश’ की पात्र काया के माध्यम से लेखिका नशावृत्ति की समस्या को उजागर करते हुए कहती हैं, “उस तावील रात काया ने कई प्रकार के नशे किए। वह एक अजीब सा सुकून था। किसी की याद तक नहीं आई, न दुनियादारी की कोई बात सूझी।”[14] नशा मानव समाज में मूल्यों में गिरावट का कारण है। मनुष्य की आधुनिकता की चाह उसे नशे की गर्त में धकेल रही है।

लेखिका के उपन्यास ‘कुछ न कुछ छूट जाता है’ में मूल्य परिवर्तन को आधुनिक समय में मनुष्य के जीवन के लिए सुखकर माना गया है। उपन्यास का पात्र पंकज अपनी पत्नी ऋतु की दोबारा शादी करवाना चाहता है, “उस शाम पहली बार मि. पंकज से मैं कॉफी हाऊस में मिला...मैं उसका पति हूँ। पंकज ने निहायत नर्म आवाज में मुझे सूचित किया। मैं चौंकने से खुद को नहीं बचा पाया। आपने ऐसा विज्ञापन क्यों दिया? मैं चाहता हूँ, वह फिर से घर बसा ले। लेट एज में औरतें अकेली नहीं रहना चाहतीं।”[15] पंकज नहीं चाहता कि ऋतु उसकी पत्नी रहकर उदासीन जीवन जिए। उसे लगता है अब उसे किसी अच्छे व्यक्ति के साथ वैवाहिक बंधन में बंध जाना चाहिए ताकि उसका भविष्य सुखद रहे। ऐसी ही स्थिति ‘वहाँ मैं हूँ’ कहानी-संग्रह की कहानी ‘बर्फ़ के फूल’ के पात्र शाश्वत और सहर की है। शाश्वत और सहर अपने प्रेम को संसार के सामने कभी स्वीकार नहीं कर पाते क्योंकि वे दोनों पहले से वैवाहिक बंधन में बंधे हुए

हैं। जीवन के अंतिम पड़ाव पर वे तय करते हैं कि घर से घूमने के बहाने वे निकलेंगे और कभी वापस नहीं आएंगे। शाश्वत कहता है, "सहर नहीं पहुंची अभी तक, उनके बीच फोन पर यही तय हुआ था। सहर ने बताया था उसने बेटी को बुला लिया है, उसे सब समझा देगी। जानती है बेटी उसी का साथ देगी, फिर क्या हुआ? बेटी नहीं आई, या कोई बीमार पड़ गया, वह खुद तो कभी बीमार पड़ी नहीं।"[16] सहर और शाश्वत जीवन भर अपने दायित्वों की पूर्ति में समय बिताते हैं। उन्हें पता है कि वे केवल प्रेमी नहीं है अपितु माता-पिता और अन्य पारिवारिक दायित्वों से जुड़े हैं। उनके नैतिक मूल्य उन्हें अपने पारिवारिक दायित्वों को पूरा करने की प्रेरणा देते हैं तथा वे अपने सारे पारिवारिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए जीवन बिताते हैं।

निष्कर्ष : अतः कहा जा सकता है कि मूल्य न केवल मनुष्य के आंतरिक विकास में अपितु मानव समाज के निर्माण एवं कल्याण में अहम भूमिका का निर्वहन करते हैं। ये मानव में उचित गुणों का विकास करते हैं तथा समाज को नैतिकता की राह पर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। मानव मूल्य समाज में एकता, नैतिकता, आपसी सद्भाव, सम्मान, विश्वास, सौहार्द जैसे गुणों का विकास करते हैं एवं मनुष्य के मन में एक-दूसरे के प्रति प्रेम तथा सहानुभूति उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लेखिका का साहित्य, समाज एवं मनुष्य में मानव मूल्यों के उतार-चढ़ाव की अभिव्यक्ति करता है। इनके साहित्य में जहां पथभ्रष्ट मनुष्य में मूल्य गिरावट के संकेत हैं वहीं मूल्य को संबंधों की मधुरता में वृद्धि का परिचायक माना गया हैं। मूल्यों को पारिवारिक संबंधों को मजबूती प्रदान करने वाले तथा मानवता की भावना और जीवधारियों के प्रति संवेदना का आधार माना गया है। मूल्य, मानव के मानव तथा समाज एवं प्रकृति के साथ संबंधों को गहनता प्रदान करते हैं और मानव को मूल्यवान बनाते हैं। इनका कथा साहित्य मानव को मूल्यों की महता से परिचित करवाने का प्रयास करता है एवं मूल्यों की स्थापना पर बल देता है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची :

1. दयानिधि मिश्र, उदयन मिश्र, प्रकाश उदय (सं.), हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2018, पृ.-64.
2. डॉ. शैलजा भारद्वाज(सं.), हिन्दी साहित्य में युगीन बोध, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2011, पृ.-150.
3. रत्ना लाहिड़ी, मूल्य : संस्कृति साहित्य और समय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987, पृ.-1.
4. अविनाश महाजन, उषा प्रियंवदा की कहानियों में टूटते जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्रण, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2015, पृ.-34.
5. डॉ. इंद्रनाथ मदान, हिन्दी कहानी : अपनी जुबानी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1968, पृ.-31.
6. जगदीश गुप्त, नई कविता : स्वरूप और समस्याएं, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1969, पृ.-15.
7. जया जादवानी, अंदर के पानियों में कोई सपना कांपता है, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022, पृ.-109.
8. जया जादवानी, अनकहा आख्यान, सेतु प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृ.-26.
9. जया जादवानी, देह कुठरिया, सेतु प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2021, पृ.-39.
10. जया जादवानी, तत्त्वमसि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2002, पृ.-32.
11. जया जादवानी, उससे पूछो, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ.-70.
12. जया जादवानी, मिठो पाणी खारो पाणी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2014, पृ.-169.
13. जया जादवानी, काया कितनी गांठें कितने दर्द, मंजुल पब्लिकेशन हाऊस, भोपाल, प्रथम संस्करण 2025, पृ.-74.
14. जया जादवानी, खरगोश, प्रतिबिंब प्रकाशन, तमिलनाडु, प्रथम संस्करण 2023, पृ.-47.
15. जया जादवानी, कुछ न कुछ छूट जाता है, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2023, पृ.-12.
16. जया जादवानी, वहाँ मैं हूँ, कल्पना किताब प्रकाशन, हरियाणा, प्रथम संस्करण 2018, पृ.-85.

•